

5. रेखांकित पदों के कारक बताइए –

- (क) मुसाफिर ने क्रोधपूर्ण नेत्रों से देखा ।
- (ख) दारोगा जी ने अपने मित्र की बुरी दशा देखी ।
- (ग) वे लोग खुले मैदान में, रेत पर पड़े रहे ।
- (घ) कृपाशंकर ने कई कुली बुलाये ।
- (ङ) वे लोग मुंशी जी को एक पेड़ के नीचे उठा ले गये ।

याद रखिए– कारक आठ प्रकार के होते हैं – कर्त्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक और संबोधन कारक ।

6. निम्नलिखित वाक्यों में से कारक छाँटिए और उनके नाम भी लिखिए : –

- (i) मुंशी जी को शराब-कबाब का व्यसन था ।
- (ii) माता ने बच्चे को सुलाया ।
- (iii) ठाकुर साहब गाड़ी से उतरने लगे ।
- (iv) लोग आदर से डाक्टर कहा करते थे ।

■ ■ ■

## देशप्रेमी संन्यासी



संकलित

विचार-बोध :

स्वामी विवेकानन्द भारत माता के विरल सुपुत्र थे । उन्होंने अपनी प्रचंड प्रतिभा, गंभीर ज्ञान और असाधारण वाक्शक्ति द्वारा विदेशों में भारतीय दर्शन, वेद-वेदांत का महत्त्व प्रमाणित किया । स्वामीजी ने अमेरीका और इंग्लैंड के विद्वानों को समझा दिया कि हिंदू धर्म सहनशील और मानवीय है । उसमें संकीर्णता या कट्टरता नहीं है । उन्होंने देश के लोगों को भी जगाया, सेवा का कार्य किया । कराया भी । देश का नाम उजागर किया । वे संन्यासी थे । सदा के लिए नमस्य भी ।

स्वामीजी ने भारतीयों को सुखभोग त्यागकर सादा-सीधा जीवन बीताने को कहा । सदा कर्म-तत्पर रहने, निराशा और आलस्य को छोड़ने को उत्साहित किया । सदैव जाग्रत रहने के लिए अपने भाषण में आह्वान किया था । भारत हमारा सिरमौर है । इसे भारतीय को भूलना नहीं चाहिए । स्वामीजी ने अमेरीका और इंग्लैंड जैसे समृद्धिशाली देशों में जाकर भारतीय ज्ञान का, दार्शनिक विचारों का अपने वक्तव्य के जरिये प्रचार-प्रसार किया ।

रामकृष्ण परमहंस के वे उपयुक्त शिष्य थे । आज देश भर में तथा विदेशों में इनकी अनेक संस्थाएँ भारतीय संस्कृति और दर्शन के प्रचार-प्रसार में लगी हैं । देश-विदेश में भारत के नाम को रोशन करने वाला संन्यासी और कोई नहीं स्वामी विवेकानंद ही हैं जिनका स्मरण आज देश-विदेशों में लोग कर रहे हैं ।

## देशप्रेमी संन्यासी

हम देखते हैं कि कुछ लोग धन कमाने में जुटे रहते हैं । कुछ लोग सुख भोगने को व्याकुल रहते हैं । कुछ ऐसे हैं जिनको संन्यासी कहते हैं । वे लोग अपनी इच्छा से घरबार छोड़ देते हैं । सुख के साधनों का त्याग कर देते हैं । गरीबी में जीते हैं । संसार को माया का जंजाल समझते हैं । पर आश्चर्य है कि ऐसे लोगों में कुछ अपनी मातृभूमि

से बेहद प्यार करते हैं। एक ऐसे संन्यासी थे स्वामी विवेकानन्द। देखने में बहुत सुन्दर। बड़े ज्ञानी और पंडित। सरल, विनयी और मिष्टभाषी। लेकिन प्रचण्ड प्रतिभाशाली।

सालों पहले की बात है। भारत पराधीन था। यहाँ अंग्रेजों का शासन चलता था। 1857 में लोग एक बार कोशिश करके पराजित हो गए थे। निराशा, आलस्य और कर्महीनता में डुबे हुए थे। ऐसे समय स्वामीजी ने अपने देशवासियों को ललकारा—

“मेरे प्यारे देशवासियों! उठो, जागो। जीवन का वरदान स्वतन्त्रता है। उसे प्राप्त करो। गर्व से कहो कि मैं भारतीय हूँ! हर भारतीय मेरा भाई है। भारत मेरा जीवन है, मेरा प्राण है। भारत के देवता मेरा भरणपोषण करते हैं। भारत मेरे बचपन का हिंडोला है, मेरे यौवन का आनन्द लोक है और मेरे बुढ़ापे का बैकुण्ठ है।”

एक बार स्वामीजी अमेरीका गए। वहाँ बड़ी धर्मसभा हो रही थी। उन्होंने बड़ी मर्मस्पर्शी वाणी में भारत के धर्म, आचार-विचार, ऋषि-मुनियों के चिंतन, आध्यात्मिक दृष्टिकोण का महत्व प्रतिपादित किया। अपने सुंदर, सरल, अर्थपूर्ण अंग्रेजी भाषण द्वारा स्वामीजी ने सबके दिलों को अभिभूत कर दिया।

स्वामीजी एक साल इंग्लैंड में रहे। वहाँ भारत के मालिक अंग्रेज विद्वानों को अपनी विद्वत्ता से प्रभावित किया। वे भी मान गए कि भारत में गरीबी भले ही हो, लेकिन वह ऊँचे विचारों और चिंतन के धनी है, अगुवा है।

स्वामीजी ने अपने असंख्य अनुयायियों को मानव-सेवा, ज्ञान तथा धर्म-प्रचार में लगाया। रामकृष्ण परमहंस उनके गुरु थे। उन्हीं के नाम से रामकृष्ण मिशन बनाया। आज भी देश-विदेश में उनकी अनेक संस्थाएँ जनता की सेवा में डटी हुई हैं।

देश-विदेशों में भारत के नाम को रोशन करनेवाला स्वामी जी जैसा दूसरा कोई नहीं दिखाई देता। देश को आजाद करने में, उसे सदा जाग्रत रखने में ऐसे संन्यासियों का बड़ा योगदान रहा।



**शब्दार्थ और टिप्पणी :**

मिष्टभाषी – मधुरभाषी। जंजाल – झंझट। बैकुण्ठ – स्वर्ग। भरणपोषण – अन्नवस्त्र देना। अभिभूत – मोहित, द्रवित। संन्यासी – गृह त्यागी साधु।

### प्रश्न और अभ्यास

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :**

- (क) हम संन्यासी किसे कहते हैं ?
- (ख) विवेकानंद का व्यक्तित्व कैसा था ?
- (ग) विवेकानंद ने देशवासियों को क्या कहकर ललकारा ?
- (घ) अमेरीका की धर्मसभा में स्वामीजी ने अपने भाषण में किस बात को प्रतिपादित किया ?
- (ङ) स्वामीजी ने इंग्लैण्ड के लोगों को कैसे प्रभावित किया ?
- (च) स्वामीजी ने अपनी अनुयायियों को किन-किन कामों में लगाया ?
- (छ) 1857 के बाद हमारे देश के लोग किस स्थिति में थे ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :**

- (क) भारत कब पराधीन था ?
- (ख) जीवन का वरदान क्या है ?
- (ग) अंग्रेज क्या मान गये ?
- (घ) देश को आजाद करने में किनका योगदान रहा ?
- (ङ) कौन रामकृष्ण परमहंस के उपयुक्त शिष्य थे ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द / एक वाक्य में दीजिए :**

- (क) धर्म सभा कहाँ हो रही थी ?
- (ख) देशप्रेमी संन्यासी कौन हैं ?
- (ग) स्वामीजी इंग्लैण्ड में कबतक रहे ?

- (घ) स्वामीजी के अनुसार हमारा भरण पोषण कौन करता है ?
- (ङ) स्वामीजी के गुरु कौन थे ?
- (च) सालों पहले भारत में किसका शासन चलता था ?
- (छ) स्वामीजी बूढ़ापे का बैकुण्ठ किसे मानते हैं ?
- (ज) स्वामीजी के बचपन का हिण्डोला कौन था ?
- (झ) प्रत्येक भारतीय स्वामीजी के लिए क्या था ?
- (ञ) स्वामीजी ने किसे जीवन का बरदान समझा ?

### भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए :

वाणी, विद्वान, अंग्रेजी, दृष्टिकोण, आजादी, देश, सन्यासी, गरीबी, निराशा, आनन्द, बूढ़ापा

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

विद्वान, आजाद, साल, मानव, व्याकुल, इच्छा

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) सालों पहले का बात है ।

(ख) रामकृष्ण परमहंस विवेकानंद का गुरु थे ।

(ग) देश में रामकृष्ण मिशन का अनेक संस्थाएँ हैं ।

(घ) गर्व में कहो की मैं भारतीय हूँ ।

(ङ) भारत मेरी जीवन है ।

4. निम्नलिखित में से विशेषण पद छाँटकर लिखिए :

- (क) मेरे प्यारे देश वासियों !
- (ख) यहाँ अंग्रेजों का कड़ा शासन चलता था ।
- (ग) भारत मेरे बचपन का हिंडोला है ।
- (घ) मेरे यौवन का आनंद लोक है ।
- (ङ) भारत मेरे बचपन का बैकुण्ठ है ।

5. निम्नलिखित वाक्यों में विराम चिह्न लगाइए :-

- (क) मेरे प्यारे देशवासियों उठो जागो ।
- (ख) निराशा आलस्य और कर्म हीनता में डुबे हुए थे
- (ग) उनकी सुन्दर सरल अर्थपूर्ण अंग्रेजी भाषा ने सब के दिलों को अभिभूत कर दिया
- (घ) स्वामीजी ने असंख्य अनुयायियों को मानव सेवा ज्ञान तथा धर्म प्रचार में लगाया

**अभ्यास-कार्य**

- (i) ऐसे कुछ अन्य महापुरुषों की जीवनी पढ़कर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में जानिए ।
- (ii) इस विषय को कमसे कम दो बार पढ़िए ।



# गिल्लू



महादेवी वर्मा

## लेखिका का परिचय :

महादेवी वर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद शहर में सन् 1907 को हुआ । उनकी माता हेमरानी और पिता गोविन्दप्रसाद वर्मा— दोनों कुलीन और धनी परिवार के थे । महादेवी का बचपन सुख-चैन से बीता ।

महादेवी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. पास किया; फिर वे प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रिंसिपल बन गयीं । उन्होंने हजारों लड़कियों को पढ़ाया, नारी-शिक्षा के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान रहा ।

महादेवीजी विदुषी, जागरूक और सहानुभूतिशील थीं । उनके पास तेज बुद्धि थी और कोमल हृदय था । उन्होंने जीवन और जगत को निकट से देखा । केवल मनुष्य ही नहीं, अपितु जीव-जन्तुओं तक के सुख-दुःख को उन्होंने पहचाना, अनुभव किया; समाज में फैले अनाचार, अत्याचार और विषमता का अनुभव किया; लोगों की आशा-आकांक्षा, इच्छा-अभिलाषा, पीड़ा-वेदना को समझा । उनको सरल भाव-पूर्ण भाषा में व्यक्त किया । ऐसा सजीव वर्णन किया कि पढ़ने से आँखों के सामने चित्र उभर आते हैं ।

महादेवी ने नारी के महत्त्व को समझा, उसके त्याग और बलिदान से प्रेरणा ली । उन्होंने नारी के स्नेह-प्रेम, त्याग-ममता, दुःख-दर्द और क्षमताओं की बेजोड़ छवियाँ आँकीं । नारी को उन्होंने दीपशिखा कहा, जो खुद जलकर सबको आलोक प्रदान करती है । वह नीरभरी दुःख की बदली है । बदली खुद दुःख सहकर करुणा से विगलित हो, धरती पर जल बरसाकर उसे सुख, शान्ति, शीतलता से भर देती है; जीवन को हरा-भरा कर देती है । उसी तरह नारी भी दुःख सहकर सबको आनंद देती है । महादेवी प्यार और पीड़ा की लेखिका हैं। अपनी कविताओं में उन्होंने मानव की पीड़ा, वेदना, विवशता और शक्ति-सामर्थ्य का वर्णन किया । इसलिए उनके काव्य अत्यन्त तरल और मार्मिक बन गये । वे छायावाद युग की प्रख्यात कवयित्री हो गयीं ।

महादेवी की रचनाओं में विचार हैं तो भाव भी हैं; कल्पना है तो चित्र भी है; सजीवता है, सूक्ष्मता है, करुणा है, शक्ति का संदेश भी है । इसलिए महादेवी कविता तथा गद्य— दोनों

में सिद्धहस्त हैं; अतः उनकी रचनाएँ पाठक के मर्म को छू लेती हैं। महादेवी जी ने ईश्वर की चेतना, मानव-मन की कोमलता, स्नेह-प्रेम, करुणा-वेदना को अपनी गद्य-रचनाओं में भी उजागर किया। विचारों के साथ कोमल भावनाओं को पिरोया; सूक्ष्म निरीक्षण किया। उनकी गद्य-रचनाएँ पाठक की आँखों के सामने चित्र खड़े कर देती हैं। उन्होंने साफ-सुथरी, संस्कृत शब्दों से भरी सुन्दर भाषा का प्रयोग किया।

महादेवी की कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं –

काव्य : नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत और दीपशिखा।

रेखाचित्र : अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ।

संस्मरण : पथ के साथी।

निबंध तथा भूमिकाएँ – शृंखला की कड़ियाँ, महादेवी का विवेचनात्मक गद्य, क्षणदा और संकल्पिता।

उन्होंने 'चाँद' पत्रिका की संपादना की। उन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक, पद्म भूषण तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

**विचार-बोध :**

प्रस्तुत निबंध 'गिल्लू' महादेवी का एक संस्मरण है। उनकी स्मरण-शक्ति इतनी प्रखर है कि बीती घटनाओं के पूरे ब्योरेवर वर्णन- वे अत्यन्त सहृदयता से व्यक्त करती हैं। प्राणि-मात्र के प्रति महादेवी के मन में गहरी सहानुभूति थी। अतः उनकी रचनाओं में प्रेम, पीड़ा, विश्व-वेदना और करुणा की सहज स्वाभाविक अभिव्यक्ति पायी जाती है। इस निबंध में एक गिलहरी जैसे छोटे जीव की जीवन शैली का वर्णन करते हुए महादेवी ने प्राणि-मात्र के प्रति अपने प्रेम, करुणा तथा हृदय की संवेदनशीलता से पाठकों को सराबोर कर दिया है।

महादेवी की भाषा अत्यन्त सरल, सजीव होने के साथ-साथ चित्र और प्रतीकों से पूर्ण होने के कारण सीधे असर करती है। बीच-बीच में संस्कृत के दो-एक शब्द मोतियों की भाँति चमकते और भावों को जगमगा देते हैं। इसलिए ऐसे लेखों को बार-बार पढ़ने की इच्छा होती है। इनमें कहानी का-सा मजा आता है।



## गिल्लू

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है।

परंतु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा। कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो!

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छूआ-छुआवल जैसा खेल खेल रहे हैं। यह काक भुशुंडि भी विचित्र पक्षी है— एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं। हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौवा और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे-से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गई। निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है जो संभवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं।

काकद्वय की चोंचो के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे, अतः वह निश्चेष्ट - सा गमले से चिपटा पड़ा था।

सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जाए ।

परंतु मन नहीं माना— उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लाई, फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया ।

रुई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर जैसे-जैसे उसके नन्हे से मुँह में लगाई पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गईं।

कई घंटे के उपचार के उपरांत उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका । तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्चस्त हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़कर, नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा ।

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं ।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे । मैंने फूल रखने की एक हलकी डलिया में रुई विछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया ।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा । वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था । परंतु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था ।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला ।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता । उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती ।

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लंबे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघुगात लिफाफे के भीतर बंद रहता । इस

अद्भुत स्थिति में कभी-कभी घटों मेज पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता ।

भूख लगने पर चिक-चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहर वाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता ।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया । नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी । बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके न जाने क्या कहने लगीं ?

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है ।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली । इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते, बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी ।

आवश्यक कागज-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है । मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा । तब से यह नित्य का क्रम हो गया ।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता ।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी । कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में ।

मेरे पास बहुत-से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परंतु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता ।

गिल्लू उनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बंद कर देता या झूले से नीचे फेंक देता था।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में আহত होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाजा खोला जाता गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तेजी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे आते, परंतु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिए पर सिरहाने बैठकर नन्हे-नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गरमियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गरमी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया। दिन भर उसने न कुछ खाया न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। परंतु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

उसका झूला उतारकर रख दिया गया है और खिड़की की जाली बंद कर दी गई है, परंतु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक-चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर बसंत आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है – इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी – इसलिए भी कि उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, मुझे संतोष देता है।



### शब्दार्थ :

गिल्लू – गिलहरी; गिलाई, चेखुरा, चूहे की तरह की मोटी रोएंदार पूँछ का छोटा जीव जो पेड़ों पर रहता है। काक भुशुण्डि – एक ब्राह्मण जो लोमश मुनि के शाप से कौआ हो गये थे और प्रभु श्रीराम के बड़े भक्त थे। अवमानित – अपमानित। पितरपक्ष – कुआँर की कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक का समय जब मृत पूर्व पुरुषों के नाम पर श्राद्ध आदि किया जाता है। चमेली – चंपक बेलि पुष्प। कीलें – काँटा, खूँटी। सिरहाने – चारपाई में सिर की ओर का भाग। वासंती – मदनोत्सव, वसंत-संबंधी। सोनजुही – एक प्रकार का पीला फूल। अनायास – आसानी से। हरीतिमा – हरियाली। लघुप्राण – छोटा जीव। छूआ – छुऔवल – छूने- छिपनेका खेल। समादरित – विशेष आदर। अनादरित – आदर का अभाव, तिरस्कार। अवतीर्ण – प्रकट। कर्कश – कटु, कानों को न भानेवाला। काकद्वय – दो कौए। निश्चेष्ट – बिना किसी चेष्टा या हरकत के। आश्वस्त – निश्चित। स्निग्ध – चिकना। विस्मित – आश्चर्यचकित। लघु गात – छोटा शरीर। अपवाद – सामान्य नियम को बाधित या मर्यादित करनेवाला। घोंसला – नीड़। परिचारिका – सेविका। मरणासन्न – जिसकी मृत्यु निकट हो। उष्णता – गरमी। पीताभ – पीले रंग का।

## प्रश्न और अभ्यास

### 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

- (क) सोनजुही में लगी पीली कली को देखकर लेखिका के मन में कौन-से विचार उमड़ने लगे ?
- (ख) गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया ?
- (ग) लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था ?
- (घ) गिल्लू का कार्य-कलाप कैसा था ?
- (ङ) लेखिका को क्यों ऐसा लगा कि गिल्लू को मुक्त करना आवश्यक है ?
- (च) लेखिका की अस्वस्थता में गिल्लू क्या करता था ?
- (छ) गरमी से बचने का कौन-सा उपाय गिल्लू ने खोज निकाला था ?
- (ज) गिल्लू की किन चेष्टाओं से लेखिका को लगा कि अब उसका अंत समय समीप है ?
- (झ) सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है ?
- (ञ) लेखिका को उस लघुप्राण गिल्लू की खोज क्यों थी ?

### 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

- (क) किसे देखकर लेखिका को गिल्लू का स्मरण हो आया ?
- (ख) गिल्लू लेखिका को कैसे चौंका देता था ?
- (ग) सोनजुही की स्वर्णिम कली को देखकर लेखिका को क्या लगा ?

- (घ) कौवे को कब सम्मानित किया जाता है ?
- (ङ) लघुप्राण क्यों निश्चेष्ट-सा गमले में चिपटा पड़ा था ?
- (च) भूख लगने पर गिल्लू क्या करता था ?
- (छ) गिल्लू का नित्य का क्रम कैसा था ?
- (ज) लेखिका की अस्वस्थता के समय गिल्लू का हटना क्यों एक परिचारिका के हटनेके समान लगता था ?
- (झ) गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत क्यों आ गया ?
- (ञ) कौन-से स्पर्श के साथ ही गिल्लू किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए :**

- (क) लघुप्राण किसे कहा गया है ?
- (ख) दो कौवे कैसा खेल खेल रहे थे ?
- (ग) गिल्लू के जीवन में प्रथम बसंत आने पर क्या प्रभाव पड़ा ?
- (घ) गिल्लू किसका नेता बनकर हर डाल पर उच्छलता-कूदता रहता था ?
- (ङ) किसके पास बहुत-से पशु-पक्षी हैं ?
- (च) गिल्लू का प्रिय खाद्य कौन-सा था ?
- (छ) लेखिका की अस्वस्थता में गिल्लू कहाँ बैठता था ?
- (ज) गिलहरियों के जीवन की अवधि कितने वर्ष से अधिक नहीं होती ?
- (झ) गिल्लू ने कैसी स्थिति में लेखिका की उँगली को पकड़ा था ?
- (ञ) गिल्लू को कहाँ समाधि दी गयी ?

4. निम्नलिखित अवतरणों के अर्थ स्पष्ट कीजिए :

- (क) तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है ।
- (ख) यह काक भुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है – एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित ।
- (ग) उसका हटना एक परिचारिका के हटनेके समान लगता ।
- (घ) प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया ।
- (ङ) उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, मुझे सन्तोष देता है ।

5. रिक्त स्थानों को भरिए :

- (क) कौन जाने \_\_\_\_\_ के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो ।
- (ख) \_\_\_\_\_ की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी ।
- (ग) हमने उसकी \_\_\_\_\_ संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया ।
- (घ) जिसे उसने बचपन की \_\_\_\_\_ स्थिति में पकड़ा था ।
- (ङ) \_\_\_\_\_ छोटे फूल में खिल जानेका विश्वास मुझे सन्तोष देता है ।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर दिये गये विकल्पों से दीजिए :

- (क) दो कौवे कैसा खेल खेल रहे थे ?
- (i) दौड़ लगानेका (ii) छूआ - छुआवल (iii) खाना खाने का (iv) गेंद
- (ख) लेखिका के किस विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी ?
- (i) शिव पुराण (ii) काक पुराण (iii) सूर्य पुराण (iv) नृसिंह पुराण